महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय

मौनधारा (मून्दडी), कपिष्ठल (कैथल), हरियाणा

(हरियाणा सरकार के अधिनियम २०/२०१८ द्वारा संस्थापित एवं यू.जी.सी. की धारा २(एफ) के अन्तर्गत मान्यता प्राप्त)

महर्षि-प्रभा

मासिक ई-पत्रिका

अंक-१८
नवम्बर-दिसम्बर
२०२३
विक्रमी संवत्
२०७९-८०

संरक्षक

श्री बंडारु दत्तात्रेय
(महामहिम राज्यपाल)

श्री मनोहरलाल खट्टर
(मुख्यमंत्री हरियाणा)

श्री मूलचन्द शर्मा
(माननीय उच्च शिक्षा मंत्री)

मार्गदर्शक

प्रो. रमेश चन्द्र भारद्वाज
(कुलपति)

प्रो. बृजपाल
(कुलसचिव)

सम्पादक

डॉ. कृष्ण चन्द्र पाण्डे

सहसम्पादक

डॉ. अखिलेश कुमार मिश्र

डॉ. शर्मिला

डॉ. गोविन्द वल्लभ

कवीन्द्रं नौमि वाल्मीकिं यस्य रामायणी कथाम् ।
चन्द्रिकामिव चिन्वन्ति चकोरा इव साधवः ।।

ई-मेल – publication@mvsu.ac.in

mvsu.ac.in MVSUOFFICIAL

'मा कश्चित दु:खभाग् भवेत्'

भारतं भूमिखण्डमात्रेव नास्ति । इयंभूमि: देवानामाराध्यभूमिरस्ति । देवा: अत्र जन्मलब्ध्वा स्वकीयं धन्यं मन्यन्ते अस्य प्रशस्तिगीतानि गायन्ति । एषा भूमि जीवन्तसांस्कृतिक विचारसमूहदुर्गमस्ति । यत्र विश्वं भवत्येकनीडम् । भारतीय संस्कृतौ 'अहं' इत्यस्य स्थानं नास्ति । सर्वभूत हितेरता: इति भावनया वयं परस्परं मिलित्वा वसाम: । इत्यस्य नाम कुटुम्बमस्ति । एषाकुटुम्बभावना एव भारतीय समाजस्य कृते दैवीयगुणस्य संचारं करोति। आत्मिक विकासेन सार्धमेव एषा भावना दृढ़ी भवति । आत्मिक विकासस्य प्रथमापाठशाला कुटुम्बमेवास्ति । भारतीय कुटुम्ब परम्परायाः अनादि कालादेव प्रचलम् अस्ति । रामायण काले वयं पश्याम: यत् परिवार व्यवस्था कथम् आदर्शरूपेण स्थापिता आसीत् । भारतीय समाजे कौटुम्बिक परम्पराया: आदर्श स्वरूपं रामायण काले स्थापित-मूल्यानामाधारे स्थापिता वर्तते ।

रामायण ग्रन्थ: भारतीय-संस्कृते: आदर्शग्रन्थ: विद्यते । मानवस्य व्यक्तिगत जीवनं कथं स्यात्, पारिवारिक जीवन कथं स्यात्, पारिवारिक मूल्यानां स्थापना कथं स्थापितं भवितुर्महति, सामाजिक मूल्यानां स्थापना कथं स्यात्, मित्रंप्रति कथं व्यवहार:करणीय:, परराष्ट्रनीति कथं स्यात्, मानवीय मूल्यानां स्थापना, इत्यादय: सर्वे आदर्शा: रामायणग्रन्थे स्थापिता सन्ति । रामराज्यं एक आदर्श राज्य व्यवस्थाया: प्रतीकं मन्यते । अधुनाऽपि आदर्श शासन व्यवस्थाया: चर्चा कुर्म: चेत् रामराज्यस्य एव चित्रं स्मृति पटले आगच्छति ।

वैश्विक स्तरे अपि यदि वयं पश्याम: तर्हि अद्य सर्वत्र अशान्ति: दृश्यते मूल्यानामभाव: सर्वत्र दृश्यते । मानवीय मूल्यानां पतनं जातम् । एतस्य कारण एकमेव प्रतिभाति यत् तत्र सांस्कृतिक मूल्यानामभाव अस्ति । संस्कृति: मानवीय मूल्यानां रक्षणं करोति। ततोऽपि भारतीय संस्कृति विश्वस्य श्रेष्ठतमा कथ्यते यतोहि सा एव 'वसुधैव कुटुम्बकम्' इति भावनया कार्यं करोति ।

'सर्वे भवन्तु सुखिन:' इति भावनया या संस्कृति: पल्लविता भवति सा भारतीया संस्कृतिरेवास्ति । अद्य वयं पश्याम: यत् समग्रे विश्वे भारतीय संस्कृतिं प्रति आकर्षणं जायते । विश्वस्य शक्तिसम्पन्नदेशा: अपि मन्यन्ते यत् अधुना विश्वे शान्ति: स्थापना भारतीय जीवनमूल्यानामाधारे एव भवितुमर्हति । भारतीय संस्कृते: आधार: वैदिक संस्कृति: एव अस्ति । लौकिक साहित्ये रामायणम् तस्य आधार-स्तम्भोऽस्ति । अयोध्यायां श्री राम मन्दिरस्य पुन: स्थापना रामराज्यस्य स्थापना अस्ति । अनेन न केवल भारते अपितु समग्रेऽपि विश्वे श्रीरामस्य आदर्श जीवन-प्रतिबिम्बं स्थापितं भविष्यति । श्रीरामस्य जीवनं प्राणिमात्रस्य कल्याणाय आसीत् । तस्य जीवनादर्शं स्वजीवने वयं धारयाम: चेत् विश्वं स्वर्गतुल्यं भविष्यति नात्र संशय: ।

सम्पादक:

संस्कृत विश्वविद्यालय द्वारा योग शिविरों का आयोजन

विश्वविद्यालय के योग विभाग द्वारा 4 नवम्बर से 25 नवम्बर तक विभिन्न विद्यालयों में तीन दिवसीय योग शिविरों का आयोजन करते विभाग के छात्र एवं योग करते छात्रगण।

महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय के छात्रों ने किया शैक्षणिक भ्रमण और सीखे स्वरोजगार के गुण

महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय कैथल की ओर से 18-11-2023 को प्रो. डॉ. कृष्ण चंद्र पाण्डे, डॉ. शर्मिला तथा डॉ. नवीन शर्मा के सान्निध्य में आचार्य, एम.ए और विद्यावारिधि के छात्रों को गुहला चीका क्षेत्र में स्थापित शिव कैलाश ग्रीन एनर्जी औद्योगिक संस्थान में शैक्षणिक भ्रमण के लिए ले जाया गया। जिसका उद्देश्य छात्रों को स्वरोजगार के गुण सिखाना रहा । शिव कैलाश ग्रीन एनर्जी औद्योगिक संस्थान के प्रबंधन निदेशक श्री अमित कुमार ने बताया कि संस्थान में 7 प्रकार के प्राकृतिक बैक्टीरिया संचयन के साथ सक्रिय कार्बन के साथ मैट्रिक्स जैव-समृद्ध कार्बनिक खाद बनाया जाता है। शैक्षणिक भ्रमण पर आये हुए सभी छात्र छात्राओं और आचार्य को संस्थान की ओर से जैविक कार्बनिक उत्पाद वितरित किया गया।

संस्कृत विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो.रमेश चन्द्र भारद्वाज ने छात्रों को प्रोत्साहित करते हुए कहा कि इस प्रकार के शैक्षणिक भ्रमण कार्यक्रमों द्वारा छात्रों में न केवल स्वरोजगार के लिए प्रेरणा मिलती है अपितु उनका सर्वांगीण विकास भी होता है। भविष्य में भी इस प्रकार के शैक्षणिक भ्रमणों के द्वारा छात्रों को समाजोपयोगी नागरिक बनाया जाएगा।

महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय द्वारा 'विकसित भारत 2047' विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन

दिनांक 23 दिसम्बर 2023 को महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय, कैथल में **'विकसित भारत 2047'** विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। जिसमें मुख्य अतिथि **श्री कपिल कुमार**, उप-जिला अधिकारी, कैथल, विशिष्ट अतिथि **प्रो. एस.के.चहल**, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, अध्यक्ष विश्वविद्यालय के कुलपति **प्रो. रमेश चन्द्र भारद्वाज** तथा मुख्य वक्ता **प्रो. भाग सिंह बोदला**, शैक्षणिक अधिष्ठाता एवं संयोजक डॉ. जगतनारायण (अधिष्ठाता, छात्र कल्याण) रहे।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. रमेश चन्द्र भारद्वाज ने कहा कि इस संगोष्ठी का उद्देश्य युवाओं को विकसित भारत के प्रति प्रोत्साहित करना है। माननीय प्रधानमंत्री श्रीमान् नरेन्द्र मोदी जी ने विकसित भारत की नई दृष्टि का आह्वान किया है और यह दायित्व उन्होंने देश के विश्वविद्यालयों पर छोड़ा है। सन् 2047 में भारत की स्वाधीनता के 100 वर्ष पूरे होने पर भारत को विकसित करने में युवाओं की महत्वपूर्ण भूमिका होगी। कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के प्राध्यापक, शोधार्थी एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे। "विकसति भारत 2047" संकल्प की यात्रा के अन्तर्गत 20 दिसम्बर, 2023 को आयोजित पोस्टर मेकिंग प्रतियोगिता के विजेताओं की घोषणा की गई। प्रतियोगिता में आचार्य साहित्य द्वितीय वर्ष की छात्रा शीतल ने प्रथम स्थान, द्वितीय स्थान-अंकेश कुमार, आचार्य ज्योतिष द्वितीय वर्ष तथा तृतीय स्थान-मोनिका, शास्त्री साहित्य तृतीय वर्ष ने अर्जित किया।

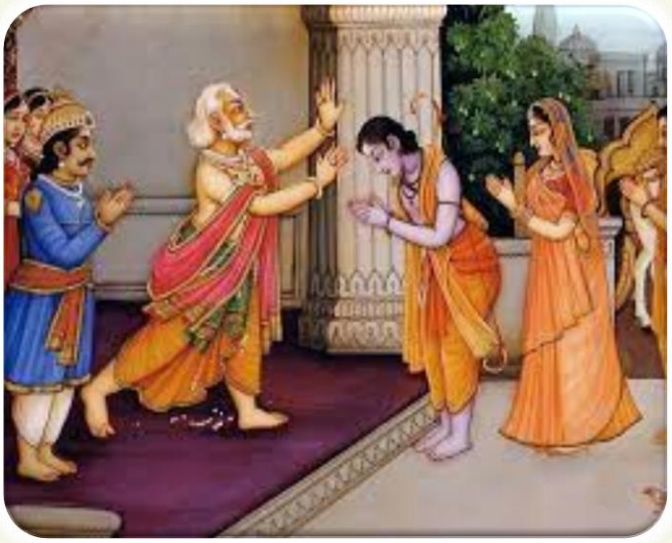

भारतीय संस्कृति की अमूल्य विरासत
परिवार परम्परा

हजारों वर्षो की भारतीय सांस्कतिक विरासत जिसने वैश्विक मानव संस्कृति को जन्म दिया। उस संस्कृति को हमारे ऋषि-मुनियों ने अपनी तपः साधना के बल पर सार्वभौमिक एवं सार्वकालिक मूल्यों से अभिसिक्त किया है। जो आज भी उतनी ही प्रांसगिक है जितनी हजारों वर्ष पूर्व थी। भारतीय मूल्यों से युक्त जिस जीवन पद्धति को आज विश्व स्वीकार कर रहा है। वही भारतीय परम्परा ही विश्व को सुख समृद्धि का मन्त्र दे सकती है। समृद्धि केवल भौतिक जीवन की नही होती समृद्धि वह होती है जो सुख और सन्तोष का माध्यम बने। इसलिए भारत का सन्त ऐसा समृद्ध हो जिसके समक्ष राजा भी नतमस्तक होता है। वह समृद्धि है ज्ञान की, आध्यात्म की, वह समृद्धि है आत्म सन्तोष की। जहाँ सन्तोष है सर्व मंगलकामना से युक्त जीवन शैली है वही गुरुत्व को प्राप्त होता है।

भारत के विषय में कहा जाता है कि भारत सोने की चिड़िया था, विश्व गुरु था। ये जो था शब्द है वह भारतीय चिति के अनुकूल नही है। भारतीय सांस्कृतिक विरासत आज भी उसी समृद्ध परम्परा की वाहक है जो हजारों वर्ष पूर्व थी अतः भारत के विषय में यह कहना कि भारत ऐसा था यह उचित नही है। भारत आज भी वैसा ही है जैसा हजारों वर्ष पूर्व था। भारत की सर्वमंगलकारी चिति आज भी उसी प्रकार की है।

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः की जीवन रचना आज भी भारतीय आत्मा का अभिन्न अंग है। अभी वैश्विक महामारी करोना काल में विश्व ने भारत के उस स्वरूप के प्रत्यक्ष दर्शन किए। हमने न केवल स्वयं की रक्षा की अपितु विश्व के समस्त मानवों के लिए प्रेरणा दी कि यह सृष्टि **'मैं'** से नही **'हम'** से संचालित होती है। करोना रक्षक भारतीय वैक्सीन को भारत ने अपने साथ-साथ विश्व में जहां-जहां उसकी आवश्यकता थी बिना किसी भेद भाव के उपलब्ध करायी। सर्वे सन्तु निरामयाः का यह उदात्त भाव विश्व ने देखा। हजारों वर्षों की भारतीय संस्कृति की परम्परा यथा अवसर प्रकट होती रहती है। यह है भारत की सनातन संस्कृति जिसके विषय में हम आज चर्चा कर रहे हैं। उसका प्रेरणा स्त्रोत हमारा साहित्य है हमारी वैदिकी प्रज्ञा है जो वेद, वेदांग, उपनिषद, पुराण, रामायण, महाभारत तथा आधुनिक साहित्य के रुप में प्रवाहित है। इस प्रज्ञा प्रवाह का स्वरूप अति व्यापक है परन्तु आज हम रामायण के विषय में चर्चा करेंगे। जिसका अनन्त प्रवाह भारतीय जन मानस में ही नही अपितु विश्व के समस्त प्राणियों में मानस में समाया हुआ है। जो भारत को आज भी विश्व गुरुत्व प्रदान कर रहा है।

एक बार अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति विल क्लिन्टन भारत आए। अपने भारत प्रवास के अवसर पर उन्होंने एक बात कही जो हम भारतीयों का सिर गर्व से उन्नत कर देता है। उन्होंने कहा- 'भारत के पास आज भी ऐसी पूंजी है जो विश्व की समग्र सम्पदा से भारी है। वह है भारत की परिवार व्यवस्था'। पश्चिम की आधुनिकता की होड़ में जहाँ आज विश्व भीड़ में भी एकाकी जीवन जीने को मजबूर है वहीं भारतीय परिवार व्यवस्था विश्व को व्यष्टि से समृष्टि का स्वरूप प्रदान करने का मन्त्र देती है। भारत की परिवार परम्परा केवल व्यष्टि तक सीमित नही है वह समृष्टि और परमेष्टि तक जाती है। 'वसुधैव कुटुम्बकम्' सम्पूर्ण वसुधा मेरा परिवार है। हम सब उसी परमतत्व के अंश है और इस नाते हम सब एक परिवार है। परिवार में त्याग, सहकार्यता, सहनशीलता, सबके सुख की कामना होती है। यह स्वरुप भारतीय ग्रन्थों में हजारों वर्षों से निबद्ध है जिसके अध्ययन में स्नात मनुष्य नारायण की पंक्ति में खड़ा हो जाता है और नारायण का स्वरूप **"सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः। सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिद् दुःख भाग्भवेत्"** ॥ के रुप में प्रकट होता है। इस परिवार परम्परा के आदर्श को वर्तमान स्वरूप में स्थापित करने का कार्य रामायण ने किया। रामायण आज भी शिक्षित अशिक्षित सभी के मन-मस्तिष्क में समायी हुई है। क्योंकि मानव की प्रवृत्ति सदैव श्रेष्ठ बनने की होती है पतित से पतित व्यक्ति भी अपनी सन्तान को उत्तम बनाना चाहता है। उत्तम बनाने के उपक्रम का आदर्श रामायण है।

भारतीय जीवन मूल्यों का आधार रामायण है। रामायण का प्रत्येक पात्र व्यक्ति तथा समाज दोनों के लिए आदर्श है। आदर्श गृहस्थ जीवन, आदर्श राजधर्म, आदर्श परिवार जीवन, आदर्श पातिव्रतधर्म, आदर्श भ्रातृधर्म, आदर्श मित्रधर्म, आदर्श राष्ट्रधर्म, आदर्श जीवन पद्धति के साथ भक्ति, ज्ञान, त्याग, वैराग्य, सदाचार की शिक्षा, स्त्री-पुरुष, बालक, वृद्ध, युवा सभी के लिए समान रुप से उपयोगी जीवन परम्परा का स्वरुप समन्वित रुप से रामायण में मिलता है।

रामायण भारत की आत्मा है। भारत के परमवैभव का स्वरुप रामायण में मिलता है। रामायण सार्वकालिक और सार्वभौमिक ग्रन्थ है। प्राणिमात्र के प्रति करुणा का आदर्श स्वरूप रामायण में दृष्टि गोचर होता है। रामायण का उद्गम भी करुणा से ही हुआ है। महर्षि वाल्मीकि की क्रौञ्च पक्षी के प्रति करुणा के भाव से आदि काव्य का उद्गम हुआ। सब जानते है तमसा नदी के तट पर महर्षि वाल्मीकि ने एक क्रौञ्च पक्षी के जोड़े को देखा जो प्रेमाभिभूत होकर एक दूसरे में समाए हुए था। इसी बीच एक व्याध (शिकारी) ने आकर अपने वाण से उनमें से नर क्रौञ्च को मार दिया। क्रौञ्च को मरा देखकर क्रौञ्ची विलाप करती है दुःख से चीत्कार करती हुई इधर-उधर फड़फडाती है।

उसकी इस दशा को देखकर वाल्मीकि का हृदय करुणा से द्रवित हो उठता है और सहसा उनके मुख से यह श्लोक फूट पड़ता है।

मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वती समाः।
यत् क्रौञ्च-मिथुनादेकमवधीः काम मोहितम्॥

निषाद तूने अच्छा नही किया जा तुझे प्रतिष्ठा कभी न मिले। तूने बिना किसी अपराध के पक्षी का वध कर दिया।

इसके पश्चात् महर्षि वाल्मीकि ने वृहद आदर्श विश्वकोश 'रामायण' का निर्माण किया। 24 हजार श्लोकों, 500 सर्ग एवं सात काण्डों में विभक्त यह एक सार्वकालिक सार्वभौमिक आदर्श विश्वकोश है। जिसके आधार पर हजारों वर्षो से आज तक अनेक ग्रन्थों की रचना की जा रही है। विश्व के अधिकांश देश जिसके आदर्शों को लेकर अपनी शासन व्यवस्था, न्याय व्यवस्था चला रहे हैं। ज्ञान और विज्ञान का उद्भुत संगम रामायण में मिलता है। आदर्श राज्य की कल्पना में रामराज्य की ही चर्चा आती है। आज हर व्यक्ति रामराज्य की कल्पना करता है।

परिवार की व्यवस्था का आदर्श रामायण है। राम जैसा पुत्र, भरत जैसा भाई की चाह प्रत्येक व्यक्ति की रहती है। हनुमान जैसा सेवक प्राप्त करने की इच्छा सभी की होती है। सुग्रीव जैसी मित्रता का अद्भुत उदाहरण रामायण से मिलता है। त्याग की प्रतिमूर्ति भरत और लक्ष्मण आज भी आदर्श हैं। देशभक्ति की पराकाष्ठा रामायण में देखने को मिलती है। आज जहां अच्छी नौकरी पाने के लालच में युवा अपने देश का त्याग कर विदेश में रहना चाहता है। वही रामायण हमें बताती है जननी और जन्म भूमि स्वर्ग से बड़ी है। स्वर्गमयी लंका को देखकर भी राम कहते हैं।

अपि स्वर्गमयी लंका न मे लक्ष्मण रोचते।
जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी॥

पारिवारिक व्यवस्था का उत्तम स्वरूप रामायण में मिलता है। परिवार का मुखिया पिता होता है। पिता के पश्चात ज्येष्ठ पुत्र परिवार का दायित्व निभाता है। यह भारत की आदर्श परिवार की नींव है। रामायण हमें सिखाती है। पिता-पुत्र का सम्बन्ध कैसा होना चाहिए। भाई-भाई में कैसा व्यवहार हो, पति-पत्नी का स्वरुप कैसा हो। माता-पुत्र का आदर्श व्यवहार क्या हो। परिवार के सदस्य एक दूसरे के हितों का किस प्रकार से ध्यान रखें। एक दूसरे के प्रति समर्पण तथा त्याग भाव हो। पति-पत्नी के सम्बन्धों के साथ विवाह की परम्परा में माता-पिता की आज्ञा आवश्यक अंग है। गुरु के प्रति शिष्य का कर्तव्य तथा शिष्य के प्रति गुरु का दायित्व। परिवार के मुखिया की इच्छा ही सबके लिए आदेश है यह स्वीकार करके ही परिवार सुदृढ़ होता है। परिवार के सभी सदस्य एक दूसरे के पूरक होते है यह भाव जाग्रत करती है रामायण। आदर्श परिवार व्यवस्था का उदाहरण रामायण से मिलता है।

यही भारत का आदर्श है यही भारत की परिवार व्यवस्था की आत्मा है। इसलिए जब विल क्लिटंन भारत की प्रशंसा करता है और यह कहता है कि भारत की सर्वश्रेष्ठ सम्पदा है वह है परिवार व्यवस्था। यह परिवार परम्परा भारत को व्यष्टि से समष्टि की ओर जाने का मार्ग दिखाती है। जब व्यक्ति समष्टि की ओर उन्मुख होता है। तब उसके स्वत्व का विस्तार होता है। वह स्वत्व, जो आत्मवत् सर्वभूतेषु का मार्ग है। उस समय व्यक्ति का समष्टि में विलय हो जाता है। उसमें से त्याग की वृत्ति निर्माण होती है। समष्टि के लिए व्यष्टि का समर्पण हो जाता है। इस समर्पण भाव से ही त्यागमयी संस्कृति का जन्म होता है। त्याग से परम सुख की प्राप्ति होती है। इसी परम सुख को हमने मोक्ष कहा है। मानव का अन्तिम लक्ष्य मोक्ष की प्राप्ति है। मोक्ष बिना त्याग के सम्भव नहीं है। त्याग मार्ग धर्म से निकलता है। धर्म ही मोक्ष का भी प्रवेश द्वार है। धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष यह जीवन के पुरुषार्थ कहे जाते हैं। धर्म के आधार पर मोक्ष तक की यात्रा मानव का लक्ष्य है। यह त्याग का भाव परिवार से निर्माण होता है। परिवार त्याग से विकसित होता है। आज भोगवाद ने परिवार परम्परा को धूमिल किया है। परिवार 'तेन व्यक्तेन भुञ्जीथा' की सोच से निर्मित होता है। यह सोच भी परिवार परम्परा से विकसित होती है। यही वह परम्परा है जिसने भारत को गुरुता प्रदान की है।

डॉ. कृष्ण चन्द्र पाण्डे
विभागाध्यक्ष (हिन्दू अध्ययन)

ज्योतिष में शनि

मेरा नाम शनि है। लोग मुझे हमेशा नुकसान पहुँचाने वाला ग्रह समझते हैं। जिसके कारण लोग मेरे नाम से डर जाते हैं। मैं आपको यह स्पष्ट कर देना आपना दायित्व समझता हूँ कि मैं किसी भी व्यक्ति को अकारण परेशान नहीं करता। हाँ,यह बात अलग है कि मैंने जब भगवान शिव की उपासना की थी, तब उन्होंने मुझे दण्डनायक ग्रह घोषित करके नवग्रहों में स्थान प्रदान किया था। यही कारण है कि मैं मनुष्य हो या देव, पशु हो या पक्षी, राजा हो या रंक सबके लिए उनके कर्मानुसार उनके दण्ड का निर्णय करता हूँ तथा दण्ड देने में निष्पक्ष निर्णय लेता हूँ फिर चाहे व्यक्ति का कर्म इस जन्म का हो या पूर्वजन्म का। मेरी निष्पक्षता और मेरा दण्डविधान जगजाहिर है। यदि गलती की है तो फिर देव हो या मनुष्य, पशु हो या पक्षी, माता हो या पिता मेरे लिए सब समान हैं।

मेरे पिता सूर्य ने जब मेरी माता छाया को प्रताड़ित किया तो मैंने उनका भी घोर विरोध करके उन्हें पीड़ा पहुँचायी। फलस्वरूप वे हमेशा के लिए मुझसे नाराज हो गये और आज तक शत्रुतुल्य व्यवहार करते हैं। यहाँ यह भी उल्लेख करना प्रासंगिक समझता हूँ कि यदि व्यक्ति ने पूर्वजन्म में अच्छे कर्म किये हैं तो मैं उसकी जन्मपत्रिका में अपनी उच्च राशि या स्व राशि पर प्रतिष्ठापित होकर उसे भरपूर लाभ पहुँचाता हूँ। अब आप मेरी प्रवृत्ति के बारे में भलीभाँति परिचित हो गये होगें।आईये,आज मैं आपको अपने सम्पूर्ण परिचय से अवगत कराता हूँ।

ज्येष्ठ कृष्ण अमावस्या को मेरा जन्म हुआ था। मेरे पिता का नाम सूर्य माता का नाम छाया है। हम पाँच भाई बहन हैं। यमराज मेरे अनुज हैं तथा तपती,भद्रा और यमुना मेरी सगी बहनें हैं। लोग मुझे अनेक नामों से जानते हैं कुछ लोग मुझे मन्द,शनैश्चर,सूर्यसूनु,सूर्यज, अर्कपुत्र,नील,भास्कर,असित,छायात्मज आदि कहकर भी सम्बोधित करते हैं। मेरा आधिपत्य मकर एवं कुम्भ राशि तथा पुष्य,अनुराधा एवं उत्तराभाद्रपदा नक्षत्र पर है।

मैं एक राशि में ढ़ाई वर्ष तक रहकर राशि परिवर्तन करता हूं। गोचर में मैं जिस राशि में रहता हूँ उस राशि, उससे अगली और पिछली राशि वालों को मैं साढ़ेसाती से ग्रस्त करता हूँ। मैं अस्त होने के ३८ के दिन के अनन्तर पर उदय होता हूँ। मेरी उच्च राशि तुला तथा नीच राशि मेष है। जन्मकुण्डली के १२ भावों में मैं ६, ८, १० एवं १२वें भाव का कारक हूँ, जब मैं तुला, कुम्भ या मकर राशि पर विचरण करता हूँ, उस अवधि में किसी का जन्म हो तो मैं रंक से राजा बना देने में देर नहीं करता। यदि जातक के जन्म के समय मैं मिथुन,कर्क,कन्या,धनु अथवा मीन राशि पर विचरण करता हूँ तो परिणाम मध्यम, मेष,सिंह, वृश्चिक पर होऊं तो प्रतिकूल परिणाम के लिये तैयार रहना चाहिए। हस्तरेखाशास्त्र के अनुसार मध्यमा अँगुली के नीचे मेरा स्थान है। मैं भूखे को भोजन करवाने, हनुमान चालीसा तथा सुन्दरकाण्ड के पाठ करने व ऊँ शं शनैश्चराय नम: मन्त्र जप करने से सन्तुष्ट होकर जनों कष्टों को हरता हूँ। मैं लोगों को सत्कर्म करने की प्रेरणा देता हूँ।

डॉ. नवीन शर्मा
सहायक आचार्य (ज्योतिष)

मेरा गांव दयोहरा

मेरा गाँव दयोहरा हरियाणा राज्य के जिला कैथल में स्थित एक प्राचीन एवं प्रसिद्ध गाँव है। हमारा गाँव जिला मुख्यालय कैथल गाँव से मात्र 10 किमी की दूरी पर स्थित है। हमारा गाँव राष्ट्रीय राजमार्ग-65 से मात्र 2 किमी. की दूरी पर स्थित है। हमारे गाँव के नजदीकी गांव उझाना, खुराणा, क्योड़क, डोहर, जसवंती, बलवंती हैं, जो गाँव को चारों ओर से 07 पक्की सड़कों से जोडते हैं। यह गाँव कैथल जिले से पंजाब की सीमा की ओर स्थित है। 2011 की जनगणना के अनुसार गांव दयोहरा की कुल आबादी लगभग 7000 है।

शिक्षण संस्थानः- हमारे गाँव में दो सरकारी (राजकीय प्राईमरी विद्यालय और राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय) एवं दो निजी विद्यालय (सरस्वती माध्यमिक विद्यालय और श्री कृष्णा वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय) हैं जिसका लाभ गाँव के विद्यार्थियों के साथ साथ आस-पास के गाँवों के विद्यार्थियों को भी मिलता है। गाँव में और कैथल शहर के समीप अच्छे शिक्षण संस्थान होने का परिणाम यह है कि गाँव की लगभग 80% आबादी शिक्षित है तथा लगभग 200 व्यक्ति केन्द्र और राज्य सरकार के भिन्न-भिन्न विभागों में अपनी सेवाएँ दे रहे हैं। ग्राम पंचायत द्वारा गाँव में दो पुस्तकालयों (सम्राट मिहिर भोज पुस्तकालय और डॉ. भीम रॉव अम्बेडकर पुस्तकालय एवं खेल स्टेडियम में वातानुकुलित व्यायामशाला बनाई गई है, जिसमें गांव के बच्चे खेलों की तैयारी करते है।

कृषि एवं सिंचाई :- गांव के खेतों में सिचाई के लिए प्रत्येक खेत में नहर और नलकूप है, जिसके कारण गांव की भूमि बहुत उपजाऊ है। गांव के चारों ओर से खेतों के कारण वातावरण शुद्ध एवं स्वच्छ रहता है। ग्रामीण गेहूँ, ज्वार, बाजरा, चावल के साथ-साथ सब्जियों इत्यादि को भी उगाते हैं। गांव में खेती के अलावा पशुपालन, मुर्गीपालन और मधुमक्खी पालन आदि व्यवसाय किये जाते हैं।

धार्मिक स्थलः- हमारे गांव में लगभग सभी धर्मों के लोग प्रेम एवं सद्भावना के साथ रहते हैं। गांव में भगवान शिव का प्राचीन मन्दिर, हनुमान मन्दिर, माता बाला सुन्दरी मन्दिर, भव्य काली माता मन्दिर, माता बसन्ती मन्दिर, दादा खेडा, गुरु रविदास मन्दिर, महर्षि वाल्मीकि मन्दिर, प्राचीन गोगा मेडी, गोरख नाथ का मन्दिर, आदि है जहाँ ग्रामीण प्रति-दिन पूजा अर्चना करते हैं। समय-समय पर धार्मिक मान्यताओं एवं त्योहारों के उपलक्ष्य में मेलों का आयोजन करते है तथा होली, बैसाखी, दशहरा, दीपावली आदि त्योहारों को बड़ी धूम-धाम मिल-जुल कर मनाते है।

खिलाड़ी एवं प्रसिद्ध व्यक्ति :- हमारे गांव की कुल आबादी के लगभग 80% लोग शिक्षित हैं जो देश व प्रदेश की थल सेना, जल सेना, वायु सेना एवं विभिन्न सरकारी विभागों में सेवाएं दे रहे है। शिक्षा के साथ-साथ गाँव के युवाओं ने खेल-कूद में भी हमारे गाँव का नाम रोशन किया है। गाँव की कबड्डी खेल की टीम के खिलाड़ी श्री रवि कुमार वर्ष 2023-24 में विदेशों में भी सर्वश्रेष्ठ खिलाडी का खिताब जीत चुके हैं। इनसे प्रेरणा लेकर गांव के अन्य युवाओं ने भी खेलों की ओर अपना रुझान किया है।

सार्वजनिक सुविधाएँ :- हमारे गांव में लोगों के स्वास्थ्य की जाँच के लिए एक सरकारी चिकित्सा केन्द्र तथा दो प्राईवेट अस्पताल है। पशुओं की देखभाल के लिए सरकारी पशु अस्पताल भी है। इसके अतिरिक्त गाँव में डाकघर, ग्राम सचिवालय, दो सी.एस.सी. सैन्टर, ग्रामीण बैंक, ऑपन जिम, स्टेडियम इत्यादि की सुविधाएं है।

अमन
शास्त्री (तृतीय वर्ष)

प्रश्नमञ्जरी

(१) यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते.....। यह वाक्य किस स्मृति में है-
(क) याज्ञतल्क्य (ख) मनु (ग) पराशर (घ) अत्रि

(२) 'गीतारहस्य' के लेखक है-
(क) सर्वपल्ली राधाकृष्णन (ख) लाला लाजपत राय
(ग) बालगंगाधर तिलक (घ) मदनमोहन मालवीय

(३) 'हरिवंश' किसका परिशिष्ट ग्रन्थ है-
(क) रामायण (ख) महाभारत (ग) विष्णुपुराण (घ) भागवत

(४) अष्टाध्यायी के प्रणेता किस नगर के निवासी थे -
(क) शालापुर (ख) पुरूषपुर (ग) उज्जयिनी (घ) वलभी

(४) यूरोप में रामकथा का प्रचार किस शताब्दी में हुआ ?
(क) 15 (ख) 20 (ग) 17 (घ) 19

(६) किस कवि का 'अर्थगौरवम्' गुण प्रशंसनीय माना जाता है।
(क) कालिदास (ख) माघ (ग) भारवि (घ) भवभूति

(७) संस्कृत साहित्य में हास्य के सर्वश्रेष्ठ लेखक है-
(क) मास (ख) शूद्रक (ग) कुमारदास (घ) क्षेमेन्द्र

(८) जैन संप्रदाय के 23वें तीर्थंकर थे-
(क) नेमिनाथ (ख) मल्लिनाथ (ग) पार्श्वनाथ (घ) ऋषभदेव

(९) 'गंगालहरी' के लेखक है-
(क) जगन्नाथ (ख) मल्लिनाथ (ग) क्षेमेन्द्र (घ) सुरसेन

(१०) संस्कृत साहित्य के अहंकार पूर्ण गर्वोक्तियों के लिए प्रसिद्ध कवि हैं-
(क) जयदेव (ख) जगन्नाथ (ग) बाणभट्ट (घ) भवभूति

(उत्तराणि अग्रिमे अङ्के)

(सप्तदशङ्कस्य उत्तराणि)

(1) वामन (2) 16 (3) 03 (4) 07 (5) 150
(6) 571 (7) व्याकरणशास्त्र (8) रामायण (9) 10 वाँ (10) 18

अबला नहीं

हाँ हूँ नारी मैं, पर अबला नहीं।
हाथ नहीं उठा तो, बेचारी नहीं।
न कागज हूँ मैं, सरकारी नहीं।
न खेलो हमसे इस कद्र, मैं खेलने का सामान नहीं॥

रखते हो सब कुछ, प्रश्न जवा
मगर मैं कोई अलमारी नहीं।
कभी याद करो उस लक्ष्मी को,
जो ले तलवार भीड़ गयी॥

विद्यावती भी नारी थी
वतन के नाम भगत कर गयी।
सोचो वो सबके बारे, गलती यह वो कर गयी,
मत बनाओ प्यादा उसको, शतरंज की खिलाडी नहीं॥

हाँ हूँ नारी मैं,
पर अबला नहीं अबला नहीं।

शीतल देवी
(आचार्य साहित्य द्वितीय वर्ष)

संस्कृतभाषाया रक्षा वृद्धिश्च आवश्यकी

प्राचीनकाले अस्माकं देशे संस्कृतभाषा लोकभाषा आसीत्। इयं न हि केवलं भारतस्यैवापि तु अन्येषां देशानामपि मातृभाषा आसीत्। अद्यपि विदेशस्य विभिन्नदेशेषु संस्कृतस्य बहवः शब्दाः प्रचलिताः, विदेशिकाः जनाः अस्याः भाषायाः सम्मानं कुर्वन्ति। गुप्तकाले अस्याः समृद्धिः आसीत् अपि। संस्कृतभाषायाः सर्वे कालिदास-भारविमाघ आदि कवयः अस्मिन्नेव काले स्व-स्व महाकाव्यान् अस्वयन्। गौरांगशासकानाम् आगमनात्पूर्वं संस्कृतभाषायाः पठन-पाठनं समस्तदेशे आसीत्। लक्षाधिकाश्च छात्राः संस्कृतस्याध्ययनं कुर्वन्ति स्म। इदमेव कारणं यत् संस्कृतभाषा स्वयमेव सरला सुमधुरा सुललिता च वर्तते। अत्र सर्वेषां कृते सर्वा सामग्री उपलभ्यते। वयं चतुर्विदपुरुषार्थानां ज्ञानं संस्कृतेनैव प्राप्तवन्तः। संस्कृतभाषायां मानवजीवनस्य सर्वेषाम् अङ्गानाम् आदर्शाः नवीना नवीना विद्यन्ते। संस्कृतवाङ्मयं विलोक्य प्रतीयते यत् प्राचीनकालेऽस्मांक संस्कृतिः अतिसमृद्धिशक्तिपरिपूर्णा आसीत्। ज्ञातवन्तः सन्तोऽपि जनाः शान्तिप्रियाः आसन्। ते मनुष्याः न हि केवलं स्वदेशे अपितु निखिलस्य विश्वस्य कृते शान्तिसन्देशं प्रापयन्त आसन्।

यद्यपि सम्प्रति विदेशेषु विज्ञानस्योन्नतिः सर्वत्रावलोक्यते। परन्तु कुत्रापि शान्तिर्नास्ति। प्राचीनसमये सर्वासु कलासु दक्षाः अपि जनाः शान्तिप्रिया आसन्। इयं भाषा सर्वविधदोषशून्या संस्कृतसाहित्यं भारतस्य गौरवम् उद्घोषयति। समस्तदेशं च एकस्मिन् सूत्रे एव बध्नाति। अतः न हि केवलम् अद्य संस्कृतस्य रक्षणमेवास्माकं कार्यमपि तु अस्य दृढीकरणम् अपि आवश्यकम्। भारतीयसंस्कृतेः आधारः संस्कृतमेव। अतः संस्कतस्य रक्षणार्थं वृद्धयर्थं च उपायाः कर्तव्याः। कतिचित् अधः लिखितमस्ति। यथा-

संस्कृतज्ञा मिलित्वा स्थाने-स्थाने परिषद्-सभा गोष्ठी-भाषणसम्मेलनानां चायोजनं कुर्युः। तत्र विचारविमर्श कृत्वा योजनां योजयेयुः। ये नवीनाः लेखकाः वक्तारः भवेयुः तेषां कृते पुरस्काराणां प्रबन्धः भवेत् उत्साहवर्धनं च तेषां कर्तव्यम्। संस्कृते सरलानां नाटकानां निर्माणं कृत्वा समाजे समाजे तस्य प्रदर्शनं कार्यम्। पाठशालासु विद्यालयेषु च पाठ्यपुस्तकानां नवीनदिशा चयनं निर्माणं च भवेत्। प्रारम्भिककक्षाणां कृते सरलगद्यपद्यानां रचना भवेत्। शिक्षाविभागे अन्य राजकीयसेवा विभागे च संस्कृतच्छात्राणां प्रवेशः भवेत्। अनेन प्रकारेण संस्कृतस्य रक्षा वृद्धिश्च सरलरीत्या भविष्यति। अस्मिन् युगे यदि अस्याःभाषायाः उन्नतिः न स्यात् तर्हि अस्माकम् आदर्शः भारतीयनाम् उज्जवल चरित्रं पतनान्धकारस्य गर्ते पतिष्यति।

रजनी देवी
हिन्दू अध्ययन (प्रथम वर्ष)